दुआए मशलूल

सैय्यद इब्ने तावूस ने अपनी किताब महजूले-दावत में हज़रत इमाम हुसैन (अ:स) से रिवायत की है के आप फरमाते हैं की एक शब् मै अपने पदरे बुज़ुर्गवार आली मश्दार हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ:स) के हमराह तावाफे खाने काबा में था और वोह शब् बहुत तारीक थी और कोई मशगूले तवाफ़ न था, ज़्यादा लोग महवे ख़्वाब थे, नागाह मैंने एक आवाज़ सूनी के कोई शख्स ब आवाज़े दर्द यह शेर पढ़ रहा है :

अम्मय-युजीबो दुआ-ए-मुज़्तारे फ़ील ज़ुलमे
क़द्रामा वफ्दोका हौलत बीते व अन्ता बेहुम
ईन काना अफ्वोका ला यूर जूहो ज़ुसराफे
फामय यजूदो अलल आसेना बिल नेमते

जनाबे अमीर (अ:स) ने इमाम हुसैन (अ:स) को उकसे पास भेजा, जब वो शख्स आया, हज़रत ने नाम दरयाफ्त फरमाया, उसने अर्ज़ किया की मेरा नाम मनाज़िल इब्ने लाहक़ है और मै पहले अपनी शामाते नफ़्स, गुनाह बहुत ज़्यादा करता था, मेरा बाप मुझ को नसीहत करता और मज़्हबे खुदा से डराया करता था और मै उसको मारा करता था, एक रोज़ उसने सब रुपया मुझ से छुपा कर रखा, मै उन रुपयों को वाहियात खर्च करने चला, उसने मुझे को रोका और चाहा के रुपया मुझे से छीन ले, मैंने उसके हाथ मोड़ दिया और अपने को उसके गिरफ़्त से छुड़ा लिया, वोह मायूस हो कर ख़ाने काबा में आया और अपने हाथों को बुलंद करके ख़ुदा से मेरी शिकायत की और बद-दुआ की के मेरा एक तरफ का बदन शल हो जाए,! क़सम है उस ख़ुदा की उसकी दुआ (बद-दुआ) तमाम न हुई थी की मेरा एक पहलू (हिस्सा-ए-बदन) रह गया! जिस तरफ आप देख रहे हैं! इसके बाद मेरा बाप वतन चला गया! जब यह हाल हुआ तो मैंने अपने बाप से कमाले उर्रोजे-ख्वाही की, मेरे बाप ने मुहब्बत-ए-पेदरी से क़बूल किया, मै अपने बाप को दुआए-ख़ैर के लिए ऊँट पर सवार कर के उम्मीदे शिफ़ा में ला रहा था, के नागाह राह में एक मुर्गे ने परवाज़ की और ऊँट भड़का ,मेरा बाप ऊँट से गिर कर हालाक हो गया, अब लोग ताने तिशना करते हैं और कहते हैं की बाप के आख़ करने से बलाए-ना'गहानी में गिरफ्तार है, पस जनाबे अमीर (अ:स) ने इस दुआ को इसलिए उसके लिए तजवीज़ फरमाया और इरशाद फरमाया की किसी शब् इस दुआ को बा-वजू पढ़, इंशाल्लाह यह बला तुझ से दफा हो जायेगी और अल्लाह तेरी तौबा क़बूल करेगा! जब सुबह हुई तो वोह शख्स हज़रत अली (अ:स) की ख़िदमत में इस तरह हाज़िर हुआ की बिलकुल तंदुरुस्त और हाथ में हज़रत ली लिखी हुई दुआ और कहता जाता था या हज़रत (अ:स) बा-खुदा यह इस्मे आज़म है,

उसने शबे गुज़िश्ता जब लोग सो गए और मंजिल अहराम में लोगों की आमदो-रफत कम हुई तो मैंने अपने हाथों को आसमान की तरफ उठा कर कई मर्तबा इस दुआ को पढ़ा और फिर सो गया, इतने में आलामे रोया में रिसालत मोआब (स:अ:व:व) को देखा के वोह जनाब (स:अ:व:व) अपने दस्ते मोबारक से मेरे बदन को मलते हैं और फरमाते हैं के मुहाफिज़त कर इस नाम की (इसमें आज़म)! नागाह मैं बेदार हुआ तो देखा के तमाम अवारिज़ दफा हो गए! खुदा तुम को जज़ाये ख़ैर दे ! हज़रत इमाम हुसैन (अस:) ने फरमाया के इस दुआ में इस्मे आज़म है, इसका पढ़ना बाइसे बरकत है! रंज-ओ-ग़म दूर होता है, क़र्ज़ अदा होता है, गुनाह ख़तम हो जात है, अय्युद फना हो जाते हैं, शररे शैतान और ज़ुलमे शैतान से महफूज़ रहेगा, और हज़रत ने फरमाया की यह दुआ ब-तहारत पढी जाए, ब-ग़ैर तहारत न पढी जाए!

इस दुआ के फायेदे : इस दुआ को इशा की नमाज़ के बाद पढना चाहिए ! इस दुआ को बा-वजू और तहारत के साथ पढ़ा जाए, इससे आप की सभी वैध प्रार्थना पुरी होगी! यह बीमारी और ग़रीबी दूर करती है, गुनाह माफ़ किये जाते हैं, लकवा की बीमारी में बहुत लाभदायक है, क़र्ज़ दूर होते है, दुश्मन दोस्त बनते हैं, पारिवारिक समस्याएँ दूर होती हैं, विवाद आप के पक्ष में हल होते हैं, क़ैद से रिहाई मिलती है, दिमागी परेशानी दूर होती है, समृद्धि एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है और सफलता मिलती है, ताज़ा और स्वस्थ्य दिमाग और शारीर हमेशा आप के साथ रहता है! अगर इस दुआ को हमेशा पढ़ा जाए तो गुनाहों की माफ़ी और अल्लाह की कृपा बनी रहती है!

अल्लाहूम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद.